बनाने का प्रयत्न किया। कौटिल्य ने भारतीय राजनीति के इतिहास में प्रथम राष्ट्रीय राज्य की कल्पना की और उसे क्रियान्वित भी किया। वे केवल विचारक ही नहीं, अपितु सक्रिय राजनीतिज्ञ भी थे। चन्द्रगुप्त मौर्य के प्रधानमन्त्री के रूप में उन्होंने जिस प्रकार देश के राजनैतिक सूत्रों का संचालन किया वह भारतीय इतिहास की अनुपम देन बन गयी है।

कौटिल्य रचित 'अर्थशास्त्र'

'अर्थशास्त्र' आचार्य चाणक्य की अद्वितीय कृति का नाम है। भारत में कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' की खोज अपेक्षाकृत नवीन है। 1905 में मैसूर राज्य के तंजौर जिले के एक ब्राह्मण ने 'अर्थशास्त्र' की एक हस्तलिखित प्रति मैसूर सरकार के भारतीय विद्याओं से सम्बन्धित पुस्तकालय को भेंट की। पुस्तकालय के तत्कालीन संचालक श्री शामशास्त्री ने इस प्रति का गहन अध्ययन किया और पुस्तक के साथ मिली भट्टस्वामी की टीका के साथ प्रकाशित कराया। 1915 में इसका अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित हुआ। पश्चिमी विद्वानों को जब यह पुस्तक देखने को मिली तो वे आश्चर्यचकित रह गये और उनमें हलचल मच गयी। कुछ विद्वानों जैसे जौली, विन्सेण्ट स्मिथ, फ्लीट आदि ने इस रचना की प्रशंसा की।

'अर्थशास्त्र' ग्रन्थ को आधुनिक अर्थों में अर्थशास्त्र (Economics) नहीं समझा जाना चाहिए। प्राचीन भारतवर्ष में अर्थशास्त्र की बहुत व्यापक परिभाषा की जाती थी। विद्वान अर्थ, धर्म, कर्म, मोक्ष की संयुक्त प्रकृति को अर्थशास्त्र में परिगणित करते हैं। प्राचीन भारतीय दृष्टिकोण के अनुसार अर्थशास्त्र में ज्ञान की विभिन्न शाखाएँ—राजनीति, धर्मनीति, कूटनीति आदि सम्मिलित मानी जाती थीं। 'अर्थशास्त्र', अर्थशास्त्र (Economics) नहीं है बल्कि राजनीतिक विज्ञान का महानतम ग्रन्थ है। फिर भी इस ग्रन्थ का नाम कौटिल्य ने 'अर्थशास्त्र' क्यों रखा ? जबकि स्वयं कौटिल्य स्वीकार करते हैं कि 'कौटिल्येन नरेन्द्रार्थे शासनस्य विधिकृतः'। कौटिल्य ने राजा के लिए शासन विधि बतायी। उन्होंने पहले अध्याय के प्रारम्भ में ही स्पष्ट किया है कि वे दण्डनीति का विवेचन कर रहे हैं। दण्डनीति शब्द प्राचीन काल में भारत में राजनीति-विद्या के लिए प्रयुक्त हुआ है। आचार्य शुक्र ने राजनीति-विद्या को दण्डनीति की संज्ञा दी है। कौटिल्य ने अपने ग्रन्थ का नामकरण करनें का स्पष्टीकरण प्रस्तुत किया है। उन्होंने कहा कि "अर्थ मनुष्य की जीविका संचालन में सहायक होता है। मनुष्य जीविका प्राप्त करने के लिए

कृषि कर्म आदि भूमि पर ही करते हैं। अतः मनुष्य एवं भूमि को अर्थ कहा जाता है। इसलिए इस मनुष्य युक्त भूमि (राज्य) को प्राप्त करने और उसकी सुरक्षा करने वाले शास्त्र को 'अर्थशास्त्र' कहते हैं।" इसका अर्थ यह हुआ कि अर्थशास्त्र में राज्य का अध्ययन किया जाता है। राज्य में धर्म, कानून, राजनीति, व्यापार, उद्योग, कृषि सभी सम्मिलित हैं। इस प्रकार आचार्य के अनुसार 'अर्थशास्त्र' भूमियुक्त मनुष्यों के जीवन संचालन का ग्रन्थ है। 'अर्थशास्त्र' में शासन-व्यवस्था का पूर्ण विवेचन आ जाता है।

कौटिल्य का 'अर्थशास्त्र' राजनीतिक और शासन कला की एक महान रचना है। कौटिल्य ने अर्थशास्त्र के प्रारम्भ में ही चार विधाओं का उल्लेख किया है। प्रथम आन्वीक्षिकी (दर्शन और तर्क), दूसरी त्रयी (धर्म-अधर्म या वेदों का ज्ञान), तीसरी वार्ता (कृषि, व्यापार आदि) और चौथी दण्ड-नीति (शासनकला या राजनीतिशास्त्र)। अर्थशास्त्र का प्रतिपाद्य विषय प्रमुख रूप से दण्ड-नीति ही है। कौटिल्य ने पहले सूत्र लिखा है और उसके साथ ही भाष्य दिया है। यह शैली राजनीति जैसे गम्भीर विषय में दुरूहता न आने देने के लिए प्रयोग की गयी है।

अर्थशास्त्र की विषय-सामग्री—अर्थशास्त्र की रचना कौटिल्य ने गद्य और पद्य दोनों में की है। ग्रन्थ में 15 अधिकरण हैं, जो निम्नलिखित हैं :

1. **प्रथम अधिकरण**—विनयाधिकारिक में राजा से सम्बन्धित कार्यों और विषयों का वर्णन किया गया है। उदाहरणार्थ—मन्त्रियों की नियुक्ति एवं योग्यता, गुप्तचरों की नियुक्ति तथा राजा की रक्षा आदि से सम्बन्धित विषयों पर प्रकाश डाला गया है।

2. **द्वितीय अधिकरण**—अध्यक्ष प्रचार में शासन के विभिन्न पदाधिकारियों, उनके कार्यों आदि का वर्णन किया गया है। दुर्ग के प्रकार, कोषाध्यक्ष, वित्तनियन्त्रालय, कर, क्रय-विक्रय नियम आदि का समावेश इस अधिकरण में किया गया है।

3. **तृतीय अधिकरण**—धर्मस्थीय में दीवानी मुकदमों, विवाह, स्त्रीधन, उत्तराधिकार सम्बन्धी विषयों पर विचार किया गया है।

4. **चतुर्थ अधिकरण**—कारक रक्षण में समाज के चोर आदि की व्यवस्था पर विचार किया गया है।

5. **पंचम अधिकरण**—योगवृत में राज्य कर्मचारियों के कर्तव्यों एवं विश्वासघात आदि पर विचार किया गया है।

6. **षष्ठ अधिकरण**—प्रकृतियों के गुण में राज्य के सात तत्वों का वर्णन है।

7. **सप्तम् अधिकरण**—षाड्गुण्य में वैदेशिक सम्बन्धों पर विचार किया गया है।

8. **अष्ठम् अधिकरण**—व्यसनाधिकारिक में राज्य की सेना सम्बन्धी विचारों का उल्लेख है।

9. **नवम् अधिकरण**—अभियाष्यत्कर्म में सेना आदि का विजय के लिए प्रस्थान करने से पूर्व के विचारणीय प्रश्नों का वर्णन है।

10. **दशम् अधिकरण**—सांग्रामिक में युद्ध सम्बन्धी बातों का वर्णन किया गया है।

11. **एकादश अधिकरण**—संघवृत में कूटनीति, भेदनीति, छद्म, विजित प्रदेश में विजेता के व्यवहार से सम्बन्धित है।

12. **द्वादश अधिकरण**—आबलीयस में प्रबल अभिभोक्ता के प्रति दुर्बल राजा की छलनीति एवं उसके कर्तव्यों (सबल राजा के प्रति) का विवेचन किया गया है।

13. **त्रयोदश अधिकरण**—दुर्गलम्भोपाय में शत्रु के दुर्गों पर अधिकार प्राप्त करने के विषय में विचार किया गया है।

14. **चतुर्दश अधिकरण**—औपनिषदिक में विष, मन्त्र आदि का प्रयोग करने तथा शत्रु को पराजित करने का उपाय बताया गया है।

15. **पंचमोदश अधिकरण**—तन्त्रयुक्त में निर्णय हेतु उपयोगी युक्तियों पर विचार किया गया है।

अर्थशास्त्र में राजनीति सम्बन्धी प्रश्नों पर विस्तृत रूप से विचार किया गया है। इसे राजनीतिशास्त्र के साथ संविधान का भी ग्रन्थ कह सकते हैं। चाणक्य कोई कल्पनावादी विचारक न था। उन्होंने अरस्तू के समान व्यावहारिक राजनीतिक सिद्धान्तों का वर्णन किया है। कौटिल्य का चिन्तन गहरा और विस्तृत था। उन्होंने अपने पूर्ववर्ती राजनीतिक चिन्तन और अनुभव का गहरा अध्ययन किया है, तदुपरान्त अर्थशास्त्र ग्रन्थ की रचना की। पूर्व विद्वानों में कौणपदन्त, भारद्वाज, मनु, पराशर, नारद, इन्द्र प्रमुख हैं। उसने एक शक्तिशाली मौर्य साम्राज्य की स्थापना की।

राज्य की उत्पत्ति
[ORIGIN OF STATE]

प्राचीन भारत में राज्य की संस्था की उत्पत्ति के सम्बन्ध में कई प्रकार के सिद्धान्त माने जाते थे। पहला सिद्धान्त यह था कि युद्ध की परिस्थिति में सैनिक आवश्यकताओं के कारण